" DUROOD MAKHDUMIYYAAH "
BY MAKHDUM JAHANIYA JAHANGASHT BUKHARI UNCHI SAYYAD JALALUDDIN HUSSAIN RAHAMATULLAH TALA ALAYH

दुरुद मखदुमिय्याह शरीफ (स्लवातल मखदुमिय्याह) :-

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम.
अल्लाहुम्म सल्ले अला सैय्येदेना मुहम्मद व अला आले सैय्येदेना मुहम्मद व असहाबिही व अवलादेहि व अझवाजेही व झूर्रिय्यतेहि व अहले बयतेहि व अहले बयतेहि व असहारेहि व अन्सारेहि व अस्याएहि व मुहिब्बिहि व उम्मतेहि व अलयना मअहूम अजमइना या अरहमर राहेमीन,

तरजुमा :-
नाम से अल्लाह के बड़ा महरबान बख़्शने वाला,
या अल्लाह रहेमतें भेज हमारे आका मुहम्मद पर अवर हमारे आका मुहम्मद की आल पर, अवर आप के सहाबाओ पर, आप की अवलाद पर ,आप की अजवाज पर, आप की जूर्रिय्यत पर, आप के घराने पर उनके घराने पर, आप के ससुराल पर, आप के मददगार पर, आप के फरमाबरदारो पर , आप से मोहब्बत करने वालो पर, आप की उम्मत पर, अवर उनके साथ हम सब पर भी, ए सबसे जियादा रहेम फरमाने वाले , (आमीन)

हज़रत मखदुम जहानिया जहांगश्त सय्यद जलालुद्दीन हुसैन बुखारी ऊंची रहमतुल्लाह तआला अलयह (785 हीजरी -1383 ईसवी) जब बगरजे जियारते रोजा ए मुबारक रसुलुल्लाह मुहम्मद मुस्तुफा (सल्लल्लाहु तआला अलयही व अला आलिही व साहबिही व बारिक वसल्लम)
मदीना मुनव्वर्रा हाज़िर हुए तो अर्ज़ कीया " अस्सलामो अलयका या जद्दी " (सल्लल्लाहु तआला अलयही व अला आलिही व साहबिही व बारिक वसल्लम) तो जवाब में रोज़ा ए मुबारक से आवाज़ आइ "
अलयक्ससलाम
या वलदी " बाद में मखदुम रहमतुल्लाह तआला अलयह मजकुरा दुरूद शरीफ़ पड़ने में मशगुल हो गए तो रोज़ा ए मुबारक से रसुलुल्लाह नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलयही व अला आलिही व साहबिही व बारिक वसल्लम) ने बुलंद आवाज़ से फ़रमाया ए मेरे बेटे अगर जो कोइ भी (सोमवार) पीर की रात यह दुरूद शरीफ़ सात मरतबा पड़ेगा तो अल्लाह तआला उसकी सो हाजते पुरी फरमाएगा, सतर आखेरत की अवर तीस दुनिया की (सुबहानल्लाह)

हज़रत मखदुम जहानिया जहांगश्त सय्यद जलालुद्दीन हुसैन बुखारी ऊंची रहमतुल्लाह तआला अलयह ने फरमाया
जो कोइ इस दुरूद शरीफ को कसरत से (बहुत बार) पड़ेगा वह मजलिस ए रहेमत ए आलम (सल्लल्लाहु तआला अलयही व आलिही व साहबिही व बारिक वसल्लम) से मुसरफ होगा अवर उस पर अव्वलीन व आखिरिन के उलूम खुल जाएंगे, इनशा अल्लाह तआला.